

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये पञ्चत्रिंशं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीमन्नारायणीये पञ्चत्रिंशं दशकम् ॥

श्रीरामचरितरर्णनम्

नीतस्सुग्रीरमैत्रीं तदनु हनुमता दुन्दुभेः कायमुच्छेः

क्लिप्त्वास्तुर्धेन भूयो लुलुरिथ युगपत् पत्रिणा सप्त सालान्।

हंरा सुग्रीरघातोद्यतमतुलबलं बालिनं र्याजर्तुग्या

रर्षारेलामनैशीर्रिहतरलितस्त्रुं मतङ्गाश्रमात्ते ॥ 35.1 ॥

सुग्रीरेणानुजोक्त्या सभयमभियता

र्युहितां राहिनीं ता -

मृक्काणां रीक्क्य दिक्कु द्रुतमथ दयिता -

मार्गणायारनभ्राम्।

सन्देशं चाङ्गुलीयं परनसुतकरे

प्रादिशो मोदशाली

मार्गे मार्गे ममार्गे कपिभिरपि तदा

र्रप्रिया सप्रयासैः ॥ 35.2 ॥

र्रद्वार्ताकर्णनोद्यदगरुदुरुजरस -

म्पातिसम्पातिराक्य -

प्रोत्तीर्णार्णोधिस्तर्नगरि जनकजां

रीक्क्य दंराहङ्गुलीयम्।

प्रक्कुदोद्यानमक्कक्कपणचणरणः

सोचवक्को दशास्यं

दृष्टरा प्लुष्टरा च लक्कां ऋटिति स हनुमान्

मौलिरत्नं ददौ ते ॥ 35.3 ॥

৳রং সুগ্রীরাঙ্গদাদিপ্রবল কপিচমূচক্ররিক্রান্তভূমি -  
 চক্রোহভিক্রম্য পারেজলধি নিশিচরেন্দ্রানুজাশ্রীযমাণঃ।  
 তৎপ্রোক্তাং শক্ররার্তাং রহসি নিশমযন্ প্রার্থনাপার্থ্যরোষ -  
 প্রাস্তাণ্ণেযাস্ততেজস্জসদুদধিগিরা লঙ্করান্ মধ্যমার্গম্ ॥ 35.4 ॥

কীশৈরাশান্তরোপাহৃত গিরিনিকরৈঃ সেতুমাধাপ্য যাতো  
 যাতুন্যামর্দ্য দংষ্ট্রানখশিখরিশিলাসালশস্ত্রৈঃ স্বসৈন্যৈঃ।  
 র্যাকুর্রন্ সানুজস্ত্রং সমরভুরি পরং রিক্রমং শক্রজেত্রা  
 রেগান্নাগাস্ত্রবদ্ধঃ পতগপতিগরুন্মারুতৈর্মোচিতোহভূঃ ॥ 35.5 ॥

সৌমিত্রিস্তত্র শক্তিপ্রহতিগলদসুরাতজানীতশৈল -  
 ঘ্রাণাং প্রাণানুপেতো ব্যকৃণুত কুসৃতিশ্লাঘিনং মেঘনাদম্।  
 মাযাক্ষোভেষু রৈভীষণরচনহতস্তম্বনঃ কুস্তকর্ণং  
 সম্প্রাপ্তং কম্পিতোরীতলমখিলচমূভক্ষিণং ব্যক্ষিণোস্ত্রম্ ॥ 35.6 ॥

গুহ্নন্ জম্ভারিসম্প্রেষিতরথকরচৌ রারণেনাভিযুদ্ধ্যন্  
 ব্রহ্মাস্ত্রেণাস্য ভিন্দন্ গলততিমবলামগ্নিশুদ্ধাং প্রগুহ্নন্।  
 দেবশ্রেণীররোজ্জীরিতসমরমৃতৈরক্ষতৈরুক্ষসজ্জৈঘ -  
 লঙ্কাভত্রা চ সাকং নিজনগরমগাঃ সপ্রিয়ঃ পুষ্পকেণ ॥ 35.7 ॥

প্রীতো দির্যাভিষেকৈরযুতসমধিকান্ রৎসরান্ পর্যরংসী -  
 মৈথিল্যাং পাপরাচা শির ! শির ! কিল তাং গর্ভিণীমভ্যহাসীঃ।  
 শক্রঘ্নেনার্দঘিৎরা লরণনিশিচরং প্রার্দযঃ শূদ্রপাশং  
 তারদ্রাল্মীকিগেহে কৃতরসতিরুপাসূত সীতা সুতৌ তে ॥ 35.8 ॥

রাল্মীকেস্ত্রংসুতোদগাপিতমধুরকৃতেরাজ্জয়া যজ্ঞরাটে  
 সীতাং ৳রয্যাপ্তুকামে ক্ষিতিমরিশদসৌ ৳রং চ কালার্থিতোহভূঃ।  
 হেতোঃ সৌমিত্রিঘাতী স্বযমথ সরযুমগ্ননিশেষষভৃত্যৈঃ  
 সাকং নাকং প্রযাতো নিজপদমগমো দেব রৈকুঠমাদ্যম্ ॥ 35.9 ॥

सोहयं मर्त्यारतारसुत्रं खलु नियतं मर्त्यशिक्षार्थमेव  
रिक्लेशार्तिर्निरागस्त्यजनमपि भवेत् कामधर्मातिसक्त्या ।  
नो चेत् स्वात्मानुभूतेः क्व नु तत्र मनसो रिक्रिया चक्रपाणे  
स एव सत्त्वैकमूर्ते परनपुरपते व्याधुनु व्याधितापान् ॥ 35.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चत्रिंशत् दशकं समाप्तम् ॥